REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

उत्तर गुजरात के नागरिक स्थापत्यो

डा. मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

❊ सारांश :

स्थापत्य के दो प्रकार (१) नागरिक स्थापत्य और (२) धार्मिक स्थापत्य है। सोलंकी युग में दो प्रकार के स्थापत्यो का निर्माण हुआ था। सामान्यतः नागरिक स्थापत्य प्रजा के द्वारा होता है लेकिन इस समय राजवीओने ज्यादा प्रमाण में नागरिक स्थापत्य का निर्माण कीया था। नागरिक स्थापत्य में ग्राम, नगर, प्रासाद (महल), किल्ले, जलाशय आदि क बांधकाम विशिष्ट स्थान है।

चावडा समय के नागरिक स्थापत्यो की बहोत कम रचना हुई है। साहित्यक ग्रंथो में जो स्थापत्यो का उल्लेख हुआ है वह हाल में देखने को नहीं मिलते।

सोलंकी समय के स्थलो का व्यवस्थित खोदकाम न होने की वजह से उस समय के साहित्यिक ग्रंथो में दर्शाये हुए स्थापत्यो अभी तक मिल नहीं पाये। ज्यादातर ग्राम, नगर और प्रसाद (महल) के बारे में माहिती नहीं मील पाई।

❊ जलाशयो :

सोलंकीकालीन बहोत जलाशयो हाल में मौजूद है। राजाओ और श्रेष्ठीओ द्वारा अनेक जलाशयो का निमार्ण हुआ।

❊ प्रकार :

जलाशयो को दो भाग में विभाजित कीया जाए (अ) प्राकृतिक (कुदरती) और (ब) मानव सर्जित। गड्डेवाली जमीन में बरसात का पानी भर जाने से या भूसंचलन से जो तालाब, सरोवर तैयार हो उसको कुदरती जलाशय कहा जाता है। ऐसे जलाशयो को अखात जलाशय भी कहते है।

जब जमीन में खोदकाम करके उसके उपर बंध बनाकर नहेर द्वारा या यांत्रिक साधन की मदद से पानी ला कर नगर या शहर के बीच में या जरुरतमंद जगा पर जो सरोवर, तालाब, कुंडो का निर्माण (रचना) किया है उसको मानव सर्जित जलाशयो कहा जाता है।

❊ सहस्त्रलिंग सरोवर, पाटण :

यह सरोवर पाटण जिल्ला के ऐतिहासिक नगर पाटण में आया हुआ है।

– नामभिधान :

प्राचीन संस्कृत और प्राकृत ग्रंथो में यह सरोवर के विविध नाम दिये है। मेरुतुंग का रचा हुआ 'प्रबंध चिंतामणी' में 'सहस्त्रलिंग' नाम रखा है। 'समररासु' नामक प्राचीन गुजराती काव्य में 'सहस्त्रलिंग सरोवर' नाम दिया है। कितने ग्रंथो में 'सिध्धसर' या 'सिध्धसागर', 'दुर्लभ सरोवर', 'महासागर' या 'महासरोवर' आदि नाम दिये है।

- **जिर्णोध्धार :**

'सहस्त्रलिंग सरोवर' सिध्धराज जयसिंहने बनाया था। उस के पहले यह जगा पर सोलंकी वंश के चोथे राजा दुर्लभराजने (इ.स.१०१० से १०२० तक) 'दुर्लभ सरोवर' कराया था जो अतिशय जीर्ण हो जाने से, जयसिंहने जनसमाज के लिए नया सरोवर कराया। जो जनसमाज में 'सहस्त्रलिंग सरोवर' के नाम से विख्यात हुआ। यह नवीन सरोवर इ.स.११३९ में बनाया था। यह भव्य सरोवर हाल नये पाटण की पश्चिम दिशा तरफ आया है।

- **आकार (घाट) :**

पुरातत्वविद (विद्वानो) यह सरोवर के आकार के लिए विविध मत देते है।

डा.र.ना.महेताने यह सरोवर को 'वलय' आकार मानकर उसका सुंदर नकशा तैयार किया है।

श्री अमृतराव व. पंड्या ने खोदकाम का माप निकालकर उसका क्षेत्रफल पक्का करके, पुराने ग्रंथो में दर्शाने के मुताबिक शंख जैसा आकार मानकर नकशा बनाया है।

पाटण के संशोधक स्व. श्री रामलाल चुनीलाल मोदी 'सरस्वती पुराण' के आधार पर खोदकाम हुए पालो के आधार पर यह सरोवर का आकार लंबचोरस पक्का किया है।

पाटण के दूसरे विद्वान स्व. श्री कनैयालाल भा. दवे भी उसका आकार लंबचोरस होने को मानते है।

- **स्वरुप :**

वडोदरा राज्य पुरातत्व विभागने यह सरोवर का खोदकाम किया था। उस समय के ग्रंथो में सरोवर के बारे में जो वर्णन किया है उसके मुताबिक अवशेष मिले है। खोदकाम दरमियान पथ्थर की जालीवाले गरनाले में पानी गाल कर रुद्रकुप में आता। रुद्रकुल (गोल कुवा) (नागधारा), गरनाला और घाट के अवशेष मिलते है।

यह सरोवर सरस्वती नदी के किनारे आया है। यह नदी में से नहेर मारफत पथ्थर की जालीवाले गरनाले में पानी गालकर रुद्रकुप में आता। नदी की मिट्टी सरोवर के न आये उसके लिए पानी के साथ आयी मिट्टीने निकालने के लिए अेक रुद्रकुप (गोल कुवा) बनाया था। इस रुद्रकुप का घेरावा आशरे १३४ फ्ट का था।

पानी साफ होने के बाद दूसरे-तीसरे रुद्रकुप में पानी आता और सरोवर की बहार की पथ्थर के पगथियेवाली नहेर मारफत मलीन पानी विशाल कद के गरनाले द्वारा सरोवर में डाला जाता। पानी के निकाल के लिए ऐसी भव्य रचना सरोवर के दूसरे छोर पर थी।

- **भव्यता :**

इस सरोवर के पास आधा पाटण बसा हुआ था। सरोवर के मध्य मार्ग के आगे भव्य कीर्तितोरण आया था। सरोवर के गरनाले पर तीन देवकुलिका बनायी थी। जिसके आगे एक पथ्थर का कठेडा बनाया था। सरोवर के मध्य भाग में बकस्थल पर विंध्यावासिनी देवी का मंदिर था। आज यह टेकरेवाला स्थल राणी के महल के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर पर पहोंचने के लिए पथ्थर के कुल की रचना की है।

आचार्य हेमचन्द्रने 'द्वयाश्रय' नामक ग्रंथ में महासरोवर के किनार १००८ शिवमंदिर, १०८ देवीमंदिर और एक दशावतार का मंदिर होने को बताया है। इसके किनारे सूर्य, गणेश, कार्तिक स्वामी आदि दूसरे देवो की देहरी (छोटा मंदिर) भी थे।

इस सरोवर के कांठे किर्तिस्तंभ आया था। कवि श्रीपालने प्रशस्ति रची थी। इस सरोवर के विनाश के साथ कीर्तिस्तंभ का भी नाश हुआ। इस प्रशस्ति का खंडित एक टुकडा शिलालेख पाटण के विजलकुवा के काशी विश्वनाथ महादेव की दिवाल में बनाया है।

❊ सरोवर के वर्णन :

अद्वितीय सरोवर का वर्णन उस समय के लेखकोने अपनी कृतिओ में गद्य और पद्य में किया है।

हेमचन्द्राचार्य का 'द्वयाश्रय' नामक महाकाव्य में यह सरोवर और उसके आसपास आये हुए विविध मंदिर का वर्णन किया है।

कवि सोमेश्वरने 'कीर्तिकौमुदी' नामक काव्य रचना की। उसमें अणहिलपुर नगर और सहस्त्रलिंग सरोवर का वर्णन किया।

जयसिंहसूरिने 'हमीरमदमर्दन' नामक नाटक में सरोवर का सुंदर वर्णन किया है।

श्री बालचन्द्र सूरिने लिखा हुआ 'वसंतविलास' नामक ग्रंथ में सहस्त्रलिंग का सुरेख चित्र वर्णन किया है।

श्री अरिसिंह 'सुकृतसंकीर्तन', 'श्री यशपाले', 'मोहपराजय' नामक नाटक में, श्री जगमंगलासूरिने और प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह का एक काव्य 'समररासु' में भी 'सहस्त्रलिंग सरोवर' की भव्यता को प्रस्तुत किया है।

❊ सरोवर का विनाश :

विविध अभ्यासुओ के लेख पर से अनुमान किया जाता है कि, अणहिलपुर का विनाश अतिवृष्टि के कारण सरस्वती नदी के प्रचंड पूरने ही किया था। सरस्वती के पूर से शहर परास्त हुआ। उस वक्त शहर के साथ सहस्त्रलिंग सरोवर का भी नाश हुआ।

❊ शर्मिष्ठा तालाब :

इस तालाब का इतिहास पौराणिक तरीके से महाभारत के समय पहले और दसमे सैका के उत्तरार्ध का गीना जाय। यह तालाब किसने बनाया है यह पक्का कह शकते नहीं लेकिन इसकी रचना स्थापत्य के नियमो के हिसाब से होने की वजह से यह तालाब प्राचीन समय का होगा और उसका व्यवस्थित नवनिर्माण सोलंकी युग में हुआ होगा। ऐतिहासिक द्रष्टिसे देखा जाए तो दुर्लभराज न अखतरे के रुप में पहले नमूना के तौर पर वडनगर के शर्मिष्ठा तालाब का पुनः उद्धार करके साबरमती में से नहेर द्वारा पानी लाकर वर्षाऋतु में नदी में आये पूर के कारन नहर को, तालाब को, पौरजनो के आवासो को नुकशान न कर शके इस द्रष्टि से पानी का जोर-जोस तोडने और स्वच्छ पानी नगरजनो को मिले इस कारण नहर का पानी सीधा तालाब में न लाकर प्रथम पूर्व दिशामें आये शंख तीर्थ नामक तालाब में डाला जाता।

उसके बाद उसमें कांप, कचरा निकालकर उस तालाब का पानी दूसरा तालाब नागधारा नागतिर्थ में प्रवेश किया और उसके बाद उस तालाब में से पत्थरीय दीवालो में कि हुई योजना मुख्य तीसरा तालाब शर्मिष्ठा में जाता है। प्रथम अखतरे के रुप में वडगनर का आयोजन कर उसमें सफलता मिलने पर इसमें से सुधारा कर के सहस्त्रलिंग तैयार किया हुआ जानने को मिलता है। शर्मिष्ठा तालाब वडनगर और सहस्त्रलिंग तालाब पाटण में बनाने का यश भले ही सिद्धराज को मिला हो लेकिन सही में दुर्लभराजने दशमी सदी के उत्तरार्ध में वह तैयार किया था । सिद्धराज ने तो उसका पुनः उद्धार किया था। पथ्थर की दिवाले और तीनसो साठ पगथियेवाला यह तालाब के मध्य में बकस्थल, पक्के ओवारा और किनारे पर थोडे मंदिर आये है। तालाब की उत्तर दिशा में, पश्चिम हद शहर के पास है। उसके दोनो भाग जहाँ खत्म होते है वहाँ से शहर के चारो तरफ कोट शुरु होता है। शर्मिष्ठा तालाब में साबर का पानी जमा होता है जब वह पूरा भरा जाता है तब उसका ज्यादा पानो वायव्य कोण पर आया हुआ नदोओल दरवाजे पर आता।

हाल का वडनगर एक ऊँची टेकरी पर उसकी पूर्व सीमा पर आया हुआ शर्मिष्ठा तालाब की आसपास अर्धवर्तुल आकार आया है । इस दिव्य श्रीनगर को चारो तरफ एक वक्त बहोत बस्ती थी एसी नोंध अबुल फझलने अपने ग्रंथ ''आईने अकबरी'' में की है। उसने वडनगर के बीच में शर्मिष्ठ तालाब होने का भी निर्देश किया है। हाल का वडनगर पूर्व के प्राचीन वडनगर के अवशेष पुरातत्वीय उत्पन्न द्वारा तालाब को चोतरफ होने का मालूम हुआ है। अर्जुनबारी पर की 'श्रीपाल प्रशस्ति' में विप्रपुर (वडनगर) के कोट के प्रभाव द्वारा नगर में जलाशय जल से लोगो को तृप्त करता है ऐसा उल्लेख है। यह तालाब के बारे में नागर खंड में एक दंतकथा है उसके मुताबिक सोमवंश में वृक नामक राजा था। उसके घर उत्तरावस्था में एक पुत्री जन्मी। राजाने जोषी को बुलाकर उसकी कुंडली पढकर जोषीने कुंडली पढकर राजा को कहा कि, हे राजा यह कन्या खराब योग में जन्मी है। इसीलिए वह तुम्हारा और उसके पति का नाश करेगी। इसीलिए आप उसका त्याग करो और आप उसका नाम विषकन्या रखो। पुत्री उपर के प्रेम के लीये राजाने कन्या का त्याग किया नहीं और अपने घर पर रखी। इसीलिए राजा के उपर उसके शत्रुने चढाई करी। राजा सामने लडने गया और लडाइ में उनकी मृत्यु हुई। उनके दुश्मनोने उनक देश पर कब्जा कर लिया। ऐसा होने से राजा की नजर में रहनेवाले लोगो ने विषकन्या से ही यह सब हुआ है। एसा मानकर विषकन्या को निकाल दिया। यह कन्या फिरते हाटकेश्वर क्षेत्र में शर्मिष्ठा तालाब के पास आई और वहाँ रहते ऋषिओने अपने जन्म के खराब फल के लिए पूछा तो ऋषीने कहा की, हे राज कन्या आप पूर्व जन्म में चंडाल थे और पार्वती का अपराध किया था। इसीलिए आप के जन्म से आपके पिता को खराब फल मिला है लेकिन अब आप पार्वती को प्रसन्न किजीए और प्रायश्चित करके मुक्त हो जाओ। इसीलिए विषकन्याने वहाँ एक तालाब बनवाया और पार्वती को तप करके प्रसन्न किया। इसीलिए पार्वतीने वरदान दिया की, में तुम्हारे तप से

प्रसन्न हुआ हुँ और यह तीर्थ आज से शर्मिष्ठा तीर्थ के नाम से जाना जाएगा। इस तीर्थ में स्नान और दान करने वाले को बहोत पून्य मिलेगा। इसमें शर्मिष्ठा तालाब की उत्पत्ति दी है लेकिन उसमें से कोई ऐतिहासिक प्रमाण मिलता नहीं। सिफ इतना ही जानने को मिलता है की, नागर खंड की रचना समय शर्मिष्ठा तीर्थ था इसीलिए यह तालाब बहोत प्राचीन काल का है ऐसा जानने को मिलता है।

हाल के तालाब की बांधणी बहोत प्राचीन दिख नहीं रही इसीलिए दिख रहा है कि, पिछले के समय में वह बनाया होगा। यह तालाब पथ्थरबंध किसने बनाया उसका कोइ भी उल्लेख या प्रमाण मिलता नहीं लेकिन गुजरात की स्त्रियाँ लोकगीत में गाती है कि,

''वडनगर में जा कर सघरे समेला खोदाया
त्रणसो ने साठ पगथिये बनवाये जी रे''

यह लोकगीत पर से शर्मिष्ठा सिद्धराजने बनाया हो ऐसा मालूम पडता है लेकिन सिद्धराज के ऐतिहासिक लेखो में इसका कोई जगा में उल्लेख नहीं। अबुल फजलने 'आईने आकबरी' में यह तालाब का उल्लेख किया है। इसीलिए समज में आता है कि, शर्मिष्ठा तालाब १६मी सदी से पहले बनाया होगा। हाल का कोट शहर फिरते है और अर्जुनबारी दरवाजा के पास पूरा होता है। इसीलिए अनुमान किया जाता है कि, शहर का कोट बनाया उस समय भी शर्मिष्ठा तालाब शहर के मध्य में होगा इसीलिए भी माना जाता है की, शर्मिष्ठा तालाब १२मी सदी के पहले बनाया होगा। इस तालाब के मध्य में एक छोटी देरी है। इसके लिए दंतकथा में कहा जाता है कि, ''इस तालाब को सजीवन करने के लिए, एक स्त्रीने अपने देह का बलिदान दिया था। इसीलिए लोककथा का रासडा अभी भी स्त्रीयाँ गाती है।

❊ खानसरोवर, पाटण :

पाटण की दक्षिण में चाणस्मा जाने के रास्ते पर आया हुआ खान सरोवर मूल में कदाच सोलंकी काल का हो शकता है, लेकिन अकबर के दूधभाइ मीरझा अझीझ काका जब गुजरात के सूबेदार थे उस काल में ही संपूर्ण उसका पुनः नवीनीकरण किया।

खान सरोवर आखिर में मीरझा अझीझ कोकाने बनाया है। नदी के चालु प्रवाह के इस सरोवर में पानी पहले छोटे पूल के नीचे होकर गोल तालाब बनने के बाद दूसरे पूल के स्तंभो के नीचे से होकर सोलह बाजुओ वाले सुंदर तरीके से बनाये नाले में होकर जाता है। वहाँ छोटी इँटो से बनाया हुआ आशरे ६५ मीटर पहोला नाला मोरी में होकर सरोवर में जाता है। आशरे ६.५ मीटर का पडथार नाले के नीचे के भाग में बनाया है। और उसको २.७५ मीटर जाडी मोरी के दिवाल सामने आठ स्तंभ के टेके से खडा है।

इस सरोवर की रचना में पूराने मंदिर के खंडेरो के पथ्थरो का बहोत अच्छे तरीके से उपयोग किया है। पानी की आवक वाले भाग में पूरानी कोतरनीवाला स्तंभ देखने को मिलता है। यह स्तंभ टूंका और थोडा रुक्ष अलंकरणोवाला है।

सरोवर आशरे ४०० मीटर × ४२० मीटर लगभग चतुरस्त्र आकार का है। पथ्थर के पगथिये ठेक पानी तक जाते है। बहोत जगा पर इंटकाम साफ देखने को मिलता है। इसके चारो तरफ हिन्दु और इस्लामी स्थापत्य के नमूने भी देखने को मिलते है। संभव है कि सहस्त्रलिंग की महिमा स्वाभाविक तरीके से ज्यादा हो गया हो इसके कारण उसका पुनः नवीनीकरण किया है।

❊ संदर्भ सूचि :

१. महेता रश्मिकान्त और सावलिया रामजी. ठा., ''गुजरात के प्राचीन सरोवर, तालाब और कूडा'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, २०००

२. पटेल प्रिती एस., ''सोलंकी-वाघेला समय के पाटण के शिल्प-स्थापत्यो-एक अध्ययन'', अप्रगट लघुशोध निबंध, हेमचंद्राचाय उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी, पाटण, २००७-०८

३. महेता रश्मिकान्त और सावलिया रामजी ठा., ''सौदर्य यात्रा'' (सूर्यमंदिर, मोढेरा और राणीवाव, पाटण), श्री भो.जे.अध्ययन संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद, २००७

४. शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का प्राचीन इतिहास'', युनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, १९७३

५. दवे कनैयालाल भा., ''पाटण'', पाटण नगरपालिका, पाटण, १९७६

६. परीख प्रविणचंद्र और शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-४, श्री भो.जे.अध्ययन संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद
७. सोमपुरा कांतिलाल, ''वडनगर का कोट और श्रीपाल प्रशस्ति'', 'पथिक', सप्टेम्बर-ओक्टोबर, १९७१
८. परीख प्रविणचंद्र और शास्त्री हरिप्रसाद गं., ''गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास'', ग्रंथ-६, श्री भो.जे.अध्ययन संशोधन विद्याभवन, अहमदाबाद, १९७९

डा. मानसिंहभाई अेम. चौधरी
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज, सांतलपुर.

LBP PUBLICATION